ISSN : 2320-0391

साहित्य और संस्कृति

सृजन

ಸೃಜನ

हिंदी-कन्नड त्रैमासिक पत्रिका

ಹಿಂದಿ-ಕನ್ನಡ ತ್ರೈಮಾಸಿಕ ಪತ್ರಿಕೆ

अक्टूबर-दिसम्बर २०१९

Scanned by CamScanner

RNI Regd. No. KARBIL/2014/54464

ನಾವೆಲ್ಲ ಭಾರತೀಯರೆಂಬ ಭಾವ ಮೂಡಲಿ
ನಮ್ಮಲ್ಲಿ ಭೇದ-ಭಾವ ಪ್ರಭು ದೂರವಾಗಲಿ

ಒಂದು ತೋಟದಲ್ಲಿ ಹಲವು ಬಣ್ಣದ ಹೂಗಳು
ಅದರಂತೆ ನಮ್ಮ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಹಲವು ಮತಗಳು
ಆ ಹೂಗಳಂತೆ ಮತಗಳ ಮಕರಂದ ಬೀರಲಿ
ನಮ್ಮಲ್ಲಿ ಭೇದ-ಭಾವ ಪ್ರಭು ದೂರವಾಗಲಿ

ನಾವು ಮನೆಯ ಕಟ್ಟುವಾಗ ಭೂಮಿ ಜಾತಿ ಕೇಳಿತೇ?
ನಾವು ಶ್ವಾಸ ಎಳೆಯುವಾಗ ಗಾಳಿ ಕುಲವ ಕೇಳಿತೇ?
ಈ ಸೃಷ್ಟಿಯಲ್ಲಿ ಸರ್ವರೂ ಸಮನಾಗಿ ಬಾಳಲಿ
ನಮ್ಮಲ್ಲಿ ಭೇದಭಾವ ಪ್ರಭು ದೂರವಾಗಲಿ

ಮಣ್ಣಿನಿಂದ ಆದ ಮಡಿಕೆ ಮಣ್ಣಿಗನ್ಯವೇ?
ಚಿನ್ನದಿಂದ ಆದ ಒಡವೆ ಚಿನ್ನಗನ್ಯವೇ?
ನಿನ್ನಿಂದ ಆದ ಜೀವರು ನಿನ್ನಂತೆ ಕಾಣಲಿ
ನಮ್ಮಲ್ಲಿ ಭೇದಭಾವ ಪ್ರಭು ದೂರವಾಗಲಿ

– ಇಬ್ರಾಹೀಮ್ ಸುತಾರ

हम सब भारतीय हैं यह भावना जागृत हो
हे प्रभु, हमारे बीच के भेद-भाव दूर हो

एक ही बाग के रंगबिरंगे फूल,
उसी तरह हमारे देश में हैं अनेक मत
उन फूलों-सा हर मत का मकरंद फैले
हे प्रभु, हमारे बीच के भेद-भाव दूर हो।
हमने घर बनाए तो भूमि ने ज्ञाति पूछी ?

साँस लेते समय हवा ने कुल पूछा ?
इस सृष्टि में सभी समान रूप से जिएँ
हे प्रभु हमारे बीच के भेद-भाव दूर हो।

मिट्टी से बना घडा क्या मिट्टी से अलग है?
सोने से बना जेवर, क्या सोने से भिन्न है?
तुमसे बने जीव तुमसा ही दिखे
हे प्रभु, हमारे बीच के भेद-भाव दूर हे।

– इब्राहीम सुतार

ISSN 2320-0391

सौम्य प्रकाशन
'कबीर कुंज' महाबलेश्वर कॉलनी,
दर्गा जेल के सामने,
विजयपुर - ५८६१०३ (कर्नाटक)

सौम्य प्रकाशन
'ಕಬೀರ ಕುಂಜ' ಮಹಾಬಳೇಶ್ವರ ಕಾಲೋನಿ,
ದರ್ಗಾ ಜೇಲ ಮುಂದೆ,
ವಿಜಯಪುರ - ೫೮೬೧೦೩ (ಕರ್ನಾಟಕ)

Scanned by CamScanner

डॉ. फ. गु. हळकट्टी जी का सामाजिक एवं साहित्यिक योगदान

• डॉ. एस. टी. मेरवाडे

कर्नाटक की पुण्यभूमि में समय-समय पर महान आत्माओं ने जन्म लिया है।

कर्नाटक की महान विभूतियों में एक हैं- डॉ. फ. गु. हळकट्टी। कर्नाटक के सांस्कृतिक नगर धारवाड के एक जुलाहा परिवार में 2 जुलाई, 1880 को जन्म हुआ। पिता का नाम गुरुबसप्पा तथा माता का नाम दानम्मा था। पिता गुरुबसप्पा शिक्षक तथा एक अच्छे साहित्यकार भी थे। सन 1865 से लगभग 25 वर्षों तक अण्णिगेरी, धारवाड ट्रेनिंग कॉलेज तथा शिक्षा विभाग के विविध कार्यालयों में सेवारत रहे। श्री. गुरुबसप्पा ने कई कृतियों की रचना की, जिसमें इंग्लैंड का इतिहास, ड्यूक ऑफ वेलिंगटन का चरित्र, नेपोलियन बोनापार्ट का चरित्र, फ्रांस की राज्यक्रांति, सिकंदर बादशाह चरित्र, एकनाथ साधू चरित्र आदि उल्लेखनीय हैं। गुरुबसप्पा जी धारवाड के विद्यावर्धक संघ के संस्थापक सदस्य थे। गुरुबसप्पा जी ने वाग्भूषण, मैसूर स्टार, कर्नाटक वृत्त, लोकशिक्षण आदि कर्नाटक की पत्रिकाओं में अपने वैचारिक लेख प्रकाशित कर शिक्षा, समाज तथा साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। फ.गु.हळकट्टी पर अपने पिता का अत्यंत प्रभाव पड़ा।

फ.गु.हळकट्टी जब तीन वर्ष के थे माता दानम्मा का देहांत हुआ। उनका पालन-पोषण उनकी दादी बसम्मा ने किया। उनके जीवन में अनुशासन रहा जिसमें उनके पिता का महत्वपूर्ण योगदान था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा धारवाड में हुई। भाषा, धर्म, साहित्य तथा समाज के बारे में विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की परंतु उन्होने विद्यालय से अधिक अपने पिता से ज्ञान अर्जित किया। साथ ही वीरशैव साहित्य कृतियों का अध्ययन करते थे। अपने पिता की तरह वीरशैवधर्म और साहित्य का गहन अध्ययन, अनुसंधान कर धर्म और साहित्य के संबंध को जानने का संकल्प कर आगे की पढाई जारी रखी। उन्होंने अपने पिता को आदर्श मानकर अध्ययन करना आरंभ किया।

शिक्षा :

विद्यालय में शिक्षकों द्वारा पढ़ाए जानेवाले चरित्र, धर्म, साहित्य, समाज से जुडी व्याख्याएँ, टीकाएँ, प्रस्तुतीकरण आदि बहुत ही ध्यान से ग्रहण कर उनकी टिप्पणी करते हुए 1896 में मैट्रिक

Scanned by CamScanner

परीक्षा उत्तीर्ण की। उच्च शिक्षा के लिए उन्होंने मुंबई के सेंट ग्लेवियर महाविद्यालय में प्रवेश लिया। मुंबई जैसे बहुभाषी, वाणिज्य तथा विविध साहित्य एवं संस्कृति से युक्त जीवन फ.गु.हळकट्टी के व्यक्तित्व को नया जीवन तथा नई जागृति मिली। इसी समय कर्नाटक के प्रसिद्ध साहित्यकार आलूर वेंकटराव मुंबई में उनके सहपाठी बने।

फ.गु.हळकट्टी जी ने स्नातक में रसायन शास्त्र और भौतिकी को मुख्य विषय के रूप में चुना। मुंबई के मराठी तथा गुजराती के विविध साहित्य, संस्कृति तथा कलात्मक कार्यों में भाग लेते हुए साथ ही साथ कन्नड भाषा और साहित्य की प्राचीनता तथा उसकी गरिमा आदि के अध्ययन को आगे बढ़ाते हुए अपने सहपाठी आलूर वेंकटराव के साथ मिलकर कन्नड लोगों की दुःस्थिति के बारे में चिंतन किया करते थे। अपने मामा चिक्कोडी तमण्णप्पा के हितवचन, कन्नड अभिमान, राष्ट्रसेवा तथा समाज सेवा आदि के लिखे गए पत्रों ने हमेशा हळकट्टी जी को स्फूर्ति प्रदान की।

मुंबई का विद्यार्थी जीवन फ.गु.हळकट्टी के जीवन में भविष्य के जीवन ज्ञान प्राप्ति में विशेष महत्वपूर्ण रहा। सन 1901-02 में फ.गु.हळकट्टी जी स्नातक की डिग्री प्राप्त कर धारवाड को वापिस आए। इसी समय फ.गु.हळकट्टी जी का विवाह चिक्कोडी तम्मणप्पा की पुत्री भागीरथी के साथ सम्पन्न हुआ।

सन 1904 में फ.गु.हळकट्टी ने कानून की डिग्री प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। सन 1904 में अखिल भारतीय वीरशैव महासभा के प्रथम अधिवेशन के अध्यक्ष महादानी शिरसंगी लिंगराज के भाषण का अत्यंत गहरा प्रभाव हळकट्टी जी पर पड़ा। कर्नाटक की कृषि, सहकार, शिक्षा तथा वीरशैव साहित्य के अनुसंधान में रुचि हळकट्टी जी की प्राथमिकता रही। कानून की पढ़ाई के बाद सरकारी नौकरी न करते हुए उन्होंने बेलगाम में श्री.चौगुला के मार्गदर्शन में वकालत आरंभ कर दी। कुछ ही दिनों में वे प्रख्यात वकील बन गए। कुछ समय के पश्चात हळकट्टी जी ने बीजापुर में अपनी वकालत शुरू की।

वीरशैव धर्म, साहित्य-संस्कृति का चिंतन हळकट्टी जी के जीवन का प्रमुख लक्ष्य रहा। वे अपने मुअक्किलों को अच्छी तरह से मार्गदर्शन करते थे। साथ-साथ विभिन्न ग्रामीण प्रदेश से आए लोगों से हळकट्टी जी उनके गाँव मे स्थित पांडुलिपियाँ, पुराने ग्रंथ, टीका-टिप्पणियाँ के बारे में पूछताछ किया करते थे।

वकालत के कामों को निपटाने के बाद ताडपत्रों पर लिखी हुई पांडुलिपियों को कागज़ पर उतारते थे। वचनों को उनके विषयों के आधार पर विभाजित करते थे। कभी-कभी पांडुलिपियों पर लिखी हुई टीकाओं पर टिप्पणियाँ भी लिखा करते थे। 21 अक्तुबर 1921 में पुनः बेलगाम को गए परंतु वचन साहित्य अध्ययनसंग्रह तथा अनुसंधान के प्राप्ति आसक्ति ने उन्हें दो वर्षोंपरांत सन 1923 में वापिस बीजापुर लौटे।

हळकट्टी जी की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। मुअक्किल अपने समझ से जो भी देते थे, उसी में उनकी धर्मपत्नी भागीरथी अपना संसार चलाती थी। ऐसी गरीबी में भी अपने बच्चों की शिक्षा एवं पालन-पोषण की जिम्मेदारी बखूभी निभाई। उनका

Scanned by CamScanner

बडा बेटा चंद्रशेखर प्रतिभावान था। मुंबई के विक्टोरिया टेक्निकल संस्था से पदवी पाकर मैंचेस्टर विश्वविद्यालय से तकनीकी पदवी पाकर दिल्ली में एक ऊँचे पद पर सेवा आरंभ की। हळकट्टी जी ने अपने समय की विविध समस्याओं को बहुत ही निकट से देखा। उन समस्याओं के समाधान के लिए अनेक योजनाएँ बनाई। जिसमें प्रमुख रूप से शिक्षा, सहकार, बैंक, राजनीति, कृषि, बुनाई, ग्रामीण विकास आदि थे। शिक्षा को सबसे अधिक प्रधानता देते हुए सन 1910 में बी.एल.डी.ई. संस्था की स्थापना की। इस संस्था के अधिन सन 1917 में श्री. सिद्धेश्वर माध्यमिक विद्यालय का आरंभ किया। वर्तमान में बी.एल.डी.ई. संस्था उत्तर कर्नाटक की आदर्श एवं प्रतिष्ठित संस्था बन गई है। कला, वाणिज्य, विज्ञान, आयुर्विज्ञान तथा तंत्रज्ञान आदि शिक्षा क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने वाले इस संस्था की नींव हळकट्टी जी ने रखी। सांस्कृतिक नगर धारवाड में एक विश्वविद्यालय बनाने का सपना देखनेवाले हळकट्टी जी को उसी विश्वविद्यालय ने डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया। साथ ही साथ सूखा पीडित बीजापुर जिले में कृषि विकास के लिए कई योजनाएँ बनाई।

सामाजिक जीवन :

विजयपुर नगर परिषद के कार्यकारी समिति के अध्यक्ष बनने के बाद विजयपुर की पानी की समस्या को देखते हुए उन्होंने भूतनाल तालाब बनाने की योजना बनाई। किसान, बुनकर तथा व्यापारियों की सहायता के लिए ग्रामीण विकास संघ, किसान सहकारी संघ तथा बुनकर सहकारी संघ आदि की स्थापना की।

सन 1912 में श्री. सिद्धेश्वर अर्बन को-ऑपरेटिव बैंक की स्थापना की। सन 1912 से 1920 तक संस्थापक अध्यक्ष के रूप कार्य कर बैंक को अच्छी आर्थिक स्थिति में लेकर आए। सन 1912 में रु. मात्र 2500/- पूँजी लगाकर आज हजारों करोड की लेन-देन करने वाली देश की प्रतिष्ठित सहकारी बैंक बन गई है। यह हळकट्टी जी की दूरदृष्टि का ही परिणाम है।

सिद्धेश्वर संस्था की स्थापना :

धार्मिक श्रद्धा, भक्तिभावना तथा ग्रामीण जनता के जीवनोत्साह के विकास की दृष्टि से सिद्धेश्वर संस्था के अध्यक्ष बनकर श्री. हळकट्टी जी का कार्य बहुत ही प्रशंसनीय हैं। साधारण जनता की जागृति के लिए, किसान, मजदूर तथा कुशल कर्मियों की स्फूर्ति के लिए प्रतिवर्ष विजयपुर सिद्धेश्वर मंदिर के परिसर में संक्रांती उत्सव मनाते थे। इस उत्सव में स्तरीय जाति के बैलों का प्रदर्शन किया जाता। 10-12 दिन चलनेवाला यह उत्सव कर्नाटक और महाराष्ट्र के क्षेत्र में बड़ा उत्सव है। इसमें हळकट्टी जी का महत्वपूर्ण योगदान है।

राजनैतिक जीवन :

हळकट्टी जी के निःस्वार्थ सेवा और प्रामाणिकता के फलस्वरूप उनके कुछ मित्रों ने उन्हें राजनीतिक क्षेत्र का परिचय करवाया। सन 1917 में श्री. हळकट्टी जी विजयपुर जिला काँग्रेस कमिटी के सचिव के रूप में संघटन को मजबूत किया। अपने विविध कार्यों के कारण जनता से परिचित हुए। सन 1920 में मुंबई विधान परिषद

Scanned by CamScanner

के सदस्य के रूप में नियुक्त हुए। मुंबई विश्वविद्यालय के सिनेट सदस्य, पाठ्यक्रम समिति के सदस्य, कन्नड पुस्तक समिति, कन्नड अनुसंधान समिति, कन्नड साहित्य परिषद आदि समिति-संस्थाओं के सदस्य के रूप में सेवा की।

*** पत्रकारिता :**

वचन साहित्य के अनुसंधान को मजबूती प्रधान करने के बाद हळकट्टी जी ने पत्रकारिता के क्षेत्र में पदार्पण किया। विज्ञान के विद्यार्थी होने के कारण उनकी दृष्टि वैज्ञानिक थी। अनुसंधता होने के कारण उनकी दृष्टी सत्याबन्वेष तथा वैचारिक निष्ठा सहज रुप में आई थी। क्षेत्र के जनता को धार्मिक विचार पहुँचाना, अपने आस -पास चलनेवाले राजनीतिक, सामाजिक, कृषि, कार्मिक, घटनाओ का सही परिचय देकर सांस्कृतिक जागरण कराना, आत्माभिमान, आत्मगौरव से लोगों को जीवन-यापन करना चाहिए आदि चिंतनों के फलस्वरूप हळकट्टी जी ने पत्रकारिता के क्षेत्र में पदार्पण किया। सन1926 में 'शिवानुभव' पत्रिका आरंभ की। इसके माध्यम से धार्मिक श्रद्धा, आध्यात्मिकता, साहित्यअध्ययन, सामाजिक चिंतन आदि का प्रचार-प्रसार होने लगा। तत्पश्चात हलकट्टी जी ने सन 1927 में 'नवकर्नाटक' साप्ताहिक का प्रारंभ किया। इस पत्रिका के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, कृषि, शिक्षा सहकार आदि विचारों को पाठकों तक पहुंचाया।

सन 1923 में हलकट्टी जी ने वचनों का संकलन 'वचन शात्र सार- भाग-1' का संपादन किया। प्रदेश के विभिन्न भाग के विद्धानों तथा धार्मिक क्षेत्र के गणमान लोगों ने वचन साहित्य के इस संकलन की प्रशंसा की। सन 1926 में आरंभ हुए 'शिवानुभव' पत्रिका ने सन 1951 में अपना रजत महोत्सव मनाया।

हळकट्टी जी ने अपनी आयु के 84 वर्ष पूर्ण करते हुए 29 जून, 1964 को अपना शरीर त्याग दिया। जातिगत व्यवस्था का विरोध श्रमएव जयते, भीक्षाटन का विरोध, कर्म ही कैलाश, कर्म ही पूजा, स्त्री स्वतंत्रता आदि उनके साहित्य का सार है।

■■

प्राचार्य, बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बसवन बागेवाडी मो. 9448185705

Scanned by CamScanner